मोदी काल, संस्कृति का अंधकार काल

हेमंत कुमार झा

आधुनिक इतिहास के पन्ने पलट कर देख लीजिए। कोई भी पुनरुत्थानवादी शक्ति ऐसी नहीं हुई जिसने अपने दौर के समाज का भला किया हो। समाज के कुछ खास तबकों को इन पुनरुत्थानवादियों में भले ही तात्कालिक आकर्षण नजर आए, लेकिन अंततः वे भी अपना सिर पीटते ही देखे गए।

सिर पीटना शुरू हो भी चुका है। कोई कितना भी अतीतजीवी हो, कोई कितना भी स्वप्नजीवी हो, जीना तो उसको वर्तमान में ही है और कोई भी जीवन आर्थिक आधार के बिना पंगु है, बेमानी है। जीवन न अतीत की जुगाली से चलता है न भविष्य के कोरे स्वप्नों से। जो तालियां पीटते थे उनमें से बहुत सारे लोग अब अपना सिर पीट रहे हैं।

नवउदारवाद की अवैध संतानों के भरोसे कोई भी सत्ता कितने दिनों तक टिक सकती है? सिर्फ यही वह वर्ग है जो आज भी दिल से इस सत्ता का पैरोकार बना है। बाकी सब असमंजस में हैं। इस असमंजस के पीछे विकल्पों का भोथरापन है जिसे धार देने की कोशिशें हाल के कुछ महीनों से परवान चढ़ रही हैं।

उनके पास नफरत की खेती के सिवा और कोई रास्ता है ही नहीं जो उनकी राजनीति का मार्ग प्रशस्त करे। उनके पास कोई स्पष्ट आर्थिक चिंतन है ही नहीं। उनके वैचारिक पुरखों के पास भी नहीं था। आप उनकी किताबें पलट कर देख लीजिए, उनके भाषणों के रिकार्ड सुन कर देख लीजिए। वही घिसी पिटी बातें... कि जी, सुदूर अतीत में हम विश्वगुरु थे, हम फिर से विश्व गुरु बनेंगे, हमारे पुरखे पुष्पक विमान से उड़ते थे, हम फिर से उसमें उड़ेंगे, हमारे पूर्वजों ने प्लास्टिक सर्जरी में ऐसी महारत हासिल की थी कि एक किशोर वय आदमी की गर्दन के ऊपर हाथी के बच्चे का सिर लगा दिया था आदि आदि। अतीत के तर्कहीन आख्यानों में एक पूरी पीढ़ी को सम्मोहित कर वे भविष्य की काल्पनिक तस्वीर रच रहे हैं और इस पीढ़ी के साथ ही आने वाली पीढ़ियों के जीवन के लिए भी दुश्वारियां पैदा कर रहे हैं।

दुनिया बहुत आगे बढ़ चुकी है। कृषि सभ्यता से बरास्ते औद्योगिक सभ्यता, दुनिया अब उत्तर औद्योगिक सभ्यता के दौर में है। इस दौर में कोई संगठन, कोई नेता अतार्किक लफ्फाजियों के सहारे सत्ता तक तो पहुंच सकता है लेकिन अपने दौर पर गहरी छाप नहीं छोड़ सकता। छोड़ सकता है तो कुछ खरोंचें, जिनके निशान सभ्यता की बाहरी परतों पर लंबे अरसे तक नजर आते रहेंगे और याद दिलाते रहेंगे कि ठोस चिंतन पर आधारित न्यायपूर्ण आर्थिक नीतियों, समानता और सौहार्द्र की ओर ले जाने वाली सामाजिक नीतियों, चित्त को मानवीय गरिमा से आलोकित करने वाली सांस्कृतिक नीतियों का कोई विकल्प नहीं है।

संभव है कि उखड़ती सांसों के साथ वे जैसे-तैसे अगला चुनाव भी जीत जाएं। प्रोपेगेंडा उनका सबसे बड़ा बल है जो पिछले चुनाव में उनके बहुत काम आया था। संभव है, आगे भी कुछ ऐसा हो। लेकिन, वे जितने दिन राज करेंगे, खुद अपनी ही कब्र को और गहराई, और गहराई देते जाएंगे। और जब एक दिन वे सत्ता से बाहर होंगे तो खुद अपनी बनाई इसी कब्र में दफन हो इतिहास के ऐसे अध्याय में शामिल कर लिए जाएंगे जिन्हें पढ़ कर भावी पीढ़ियां सीख लेंगी कि इस तरह की शक्तियों का राजनीतिक उभार मानवता के व्यापक हितों के संदर्भ में कितना घातक हो सकता है।

उनका आर्थिक चिंतन इतना दरिद्र है कि इस निर्धन देश की बहुसंख्यक वंचित आबादी को बेलगाम लालच से प्रेरित कार्पोरेट शक्तियों के हवाले कर किसी खास धर्म के नाम पर राष्ट्र की कल्पनाओं और योजनाओं में डूबा हुआ है।

हालांकि, राजनीतिक रूप से वे कितने भी ताकतवर हो जाएं, अपने आईटी सेल के माध्यम से लोगों के मानस को कितना भी दूषित करने का प्रयास करते रहें, वे धर्म आधारित राष्ट्र को यथार्थ की विविधता भरी जमीन पर नहीं उतार सकते। आखिर, इस राष्ट्र की नींव में गांधी, नेहरू, सुभाष, पटेल, मौलाना आजाद, खान अब्दुल गफ्फार खां, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, बिस्मिल, अशफाकुल्लाह जैसे बलिदानियों का त्याग है, उनकी तपस्या है, दशकों चले स्वतंत्रता संघर्ष की वैचारिक विरासत है। इनकी शानदार और गरिमामयी विरासत हमें आश्वस्त करती है कि भले ही लोकतंत्र के अंतर्विरोधों का लाभ उठा कर, समय के अंधेरों में रास्ता बना कर कोई शक्ति कुछ वर्षों या दशकों के लिए सत्ता शीर्ष पर बैठ सकती है, लेकिन वह इस देश की मानवतावादी वैचारिकी को कुचल कर नया देश, नया समाज नहीं रच सकती।

उन्होंने नया संसद भवन बनाया जिसके पहले सत्र में ही उनके एक सांसद ने बदतमीज टिप्पणियों से माहौल को कोलाहल से भर दिया। वह सांसद असंसदीय शब्दों के साथ चीख रहा था और उसकी बगल में बैठे दो अन्य वरिष्ठ सांसद, जो आजकल सत्ता केंद्र से दूर हैं, निर्लज्ज तरीके से हंसते मुस्कुराते देखे गए।

वह सांसद क्यों इतनी बदतमीजी से बात कर रहा था?

क्योंकि वह जानता है कि उसके कुनबे में इस तरह की बदतमीजियां पुरस्कृत होती हैं।

सत्ता केंद्र से दूर वे दोनों वरिष्ठ सांसद तब क्यों हंसते मुस्कुराते देखे गए?

क्योंकि उन्हें पता है कि इन असंसदीय, घटिया बातों पर हंसना और खूब हंसना उन्हें सत्ता केंद्र के करीब लाने में सहायक हो सकता है। उनमें एक ख्यात डॉक्टर है एक प्रख्यात वकील। दोनों अच्छे खासे पढ़े लिखे। लेकिन उन्हें पता है कि अपनी पढ़ाई लिखाई को ताक पर रख कर उन्हें इन असभ्य, असंसदीय शब्दों पर हंसने वाली प्रतिक्रिया ही देनी है क्योंकि कक्ष में लगे दर्जनों कैमरे हर सांसद के चेहरे के हाव भाव को रिकार्ड कर रहे हैं और संभव है कि सुप्रीमो और उनके सलाहकार इन वीडियोज की पड़ताल करें... कि जब लोकतांत्रिक और संसदीय मर्यादाओं का चीर हरण हो रहा था तो उनका कौन आदमी किस मुद्रा में था, उसके चेहरे पर कैसी प्रतिक्रिया थी।

वह डॉक्टर, वह वकील अब पुरस्कृत होने की प्रत्याशा में होगा। वे पुरस्कृत होंगे भी, लेकिन देश की आत्मा उन्हें कभी माफ नहीं करेगी। इस देश की आत्मा ने मानवीय गरिमा के चीर हरण पर चुप्पी साधे रहने वाले महाज्ञानी, महाप्रतापी भीष्म और द्रोण को, महान योद्धा, महा दानी कर्ण को क्षमा नहीं किया, स्वयं कृष्ण ने उन्हें दंड दिलवाया तो इन टुच्चे नेताओं को इस देश के नैतिक मूल्य कैसे क्षमा करेंगे!

यह शोध और बहस का विषय होगा कि नरेंद्र मोदी ने अपने दौर को कितना प्रभावित किया या दौर ने मोदी के राजनीतिक उत्थान में कितनी या कैसी भूमिका निभाई, लेकिन, यह तयशुदा निष्कर्ष तो होगा ही कि भारतीय राजनीति का मोदी काल सभ्यता और संस्कृति के मानकों पर अंधकार काल कहा जाएगा।

'इंडिया' का इस्तेमाल रोकने की सरकारी कवायद

राम पुनियानी

यह संयोग ही है कि विपक्षी पार्टियों के 'इंडिया' (इंडियन नेशनल डेमोक्रेटिक इंक्लूसिव अलायन्स) के नाम से एक मंच पर आने के बाद से भाजपा सरकार आधिकारिक दस्तावेजों में 'इंडिया' शब्द के इस्तेमाल से बच रही है और उसके पितृ संगठन आरएसएस ने एक फतवा जारी कर कहा है कि हमारे देश के लिए केवल 'भारत' शब्द का प्रयोग होना चाहिए। जी20 की शिखर बैठक में भाग लेने दिल्ली आए विदेशी मेहमानों को 'भारत की राष्ट्रपति' ने भोज पर आमंत्रित किया। सत्ताधारी भाजपा भी 'इंडिया' शब्द के इस्तेमाल से बच रही है। उसका कहना है कि हमारे देश को यह नाम हमारे औपनिवेशिक शासकों ने दिया था और इसलिए इससे औपनिवेशिकता की बू आती है। पार्टी नेता हेमंत बिस्वा सरमा ने कहा कि 'इंडिया' शब्द हमारे देश की औपनिवेशिक विरासत का हिस्सा है और हमें इससे छुटकारा पा लेना चाहिए।

आरएसएस के मुखिया और अन्य पदाधिकारी भी यही बात कह रहे हैं। गुवाहाटी में एक कार्यक्रम में बोलते हुए मोहन भागवत ने कहा, "हमें इंडिया शब्द का प्रयोग बंद कर देना चाहिए और इसकी जगह भारत शब्द का इस्तेमाल करना चाहिए। कब-जब हम इंडिया इसलिए कहते हैं ताकि अंग्रेजी-भाषी लोग समझ सकें कि हम किस देश के बारे में बात कर रहे हैं। अक्सर हम प्रवाह में इस शब्द का प्रयोग करते हैं। हमें यह बंद करना चाहिए।" यह जताने के प्रयास भी हो रहे हैं कि इंडिया और भारत शब्द हमारे देश के अलग-अलग हिस्सों और अलग-अलग सांस्कृतिक धाराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। कई मौकों पर 'इंडिया' और 'भारत' को देश की परस्पर विरोधाभासी प्रवृत्तियों या घटकों के रूप में भी प्रस्तुत किया जाता है। जैसे भागवत ने ही हमें बताया था कि "बलात्कार, इंडिया में होते हैं भारत में नहीं।" उनके अनुसार, बलात्कार और सामूहिक बलात्कार केवल 'शहरी भारत' में होते हैं जहां पश्चिमी संस्कृति का बोलबाला है और 'ऐसी चीजें' ग्रामीण भारत में नहीं होतीं, जहां पारंपरिक मूल्यों की प्रधानता है। कहने की ज़रुरत नहीं कि भागवत पूरी तरह गलत हैं। यही बहस एक बार फिर जिंदा हो गयी है और इसका कारण है विपक्ष द्वारा अपने गठबंधन के लिए एकदम उपयुक्त और प्रभावी नाम चुनना।

सच तो यह है हमारे देश के नाम के अनेक स्त्रोत हैं। सभ्यताएं स्थिर पोखर की तरह नहीं होतीं। वे बहती हुई नदी की तरह होतीं हैं। समय और परिस्थितियों के साथ उनमें परिवर्तन आते रहते हैं। अतीत में कई महाद्वीपों और देशों के नाम बदले हैं।

हमारे देश को मुख्यतः दो नामों-भारत और इंडिया से पहचाना जाता रहा है। इन दोनों ही नामों के कई स्त्रोत हैं। भारत शब्द का स्त्रोत मुख्यतः धर्मग्रन्थ हैं। कुछ धर्मग्रंथों में इस भूमि को जम्बूद्वीप भी कहा गया है। सम्राट अशोक के शिलालिखों में जम्बूद्वीप शब्द ही प्रयुक्त हुआ है। जम्बूद्वीप का अर्थ है मेरु पर्वत के चारों ओर जो चार महाद्वीप हैं, उनमें से दक्षिण में स्थित महाद्वीप। यह परिकल्पना प्राचीन ब्रह्माण्ड ज्ञान का भाग है। जामुन के पेड़ के नाम पर जम्बूद्वीप कहे जाने जाने वाले दुनिया के इस हिस्से में आधुनिक मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और बांग्लादेश भी शामिल हैं। इसी तरह, गंगा नदी की घाटी, जिसमें आर्यों ने सबसे पहले डेरा डाला को, आर्यावर्त भी कहा जाता है।

भारत शब्द का संबंध महान भरत राजा के भरत वंश से है। ऋग्वेद (सप्तम अध्याय, ऋचा 18) में भरत वंश के राजा सुदस और दसराजन (दस राजाओं) के बीच युद्ध का वर्णन है। महाभारत में चक्रवर्ती सम्राट भरत का ज़िक्र आता है, जो कौरवों और पांडवों के पूर्वज थे। विष्णुपुराण में भरतवंशम की चर्चा है। भरत का साम्राज्य, वर्तमान भारत के अलावा वर्तमान पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान और ईरान तक फैला हुआ था। जैन साहित्य में बताया गया है कि चक्रवर्ती सम्राट भरत प्रथम तीर्थंकर के सबसे बड़े पुत्र थे।

इसके अलावा, हमारे देश के नामकरण में सिन्धु नदी की भी भूमिका है। अवेस्ता में इसे हप्तहिन्दू कहा गया है। वेदों में कुछ स्थानों पर इसे सप्तसिंधु बताया गया है। हखामानी (पर्शियन) स्त्रोतों में सिन्धु नदी के आसपास के इलाके को हिन्दुकुश कहा गया है। इसके भी पहले, चौथी सदी ईसा पूर्व में मेगस्थनीज ने इसे इंडिया बताया था, जो यूनानी भाषा में इंडिके हो गया। यहीं से इंडिया नाम की शुरुआत हुई। जो लोग कह रहे हैं कि इंडिया शब्द औपनिवेशिक विरासत हैं, वे इस शब्द के जटिल इतिहास से परिचित नहीं हैं और राजनैतिक उद्देश्यों से संविधान की शब्दावली "इंडिया, जो भारत है" का इस्तेमाल करना नहीं चाहते।

मानव सभ्यताएं ठहरती नहीं हैं, बल्कि ठहरी हुई सभ्यताएं प्रगति नहीं करतीं। इस सत्य का उन विभूतियों को अहसास था जो औपनिवेशिक ताकतों के विरुद्ध संघर्ष कर रही थीं। यही कारण था कि सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने "इंडिया द नेशन इन द मेकिंग" की बात की थी। यही कारण था कि गांधीजी ने अपने समाचारपत्र का नाम 'यंग इंडिया' रखा था और यही कारण था कि आंबेडकर ने पहले इंडियन लेबर पार्टी और बाद में रिपब्लिकन पार्टी ऑफ़ इंडिया का गठन किया था। 'इंडिया' शब्द कतई औपनिवेशिक विरासत नहीं है। यह शब्द ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा भारत में व्यापार करने और उसे लूटने के लिए यहां आने से बहुत पहले से प्रचलन में था। इस शब्द का इस्तेमाल औपनिवेशिकता-विरोधी आन्दोलन में भी किया गया था। और पूरी दुनिया हमारे देश को इंडिया के नाम से ही जानती है।

जो लोग औपनिवेशिक विरासत और पश्चिमी प्रभाव के नाम पर 'इंडिया' शब्द के इस्तेमाल को बंद करवाना चाहते हैं, वे तो समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व जैसे प्रजातान्त्रिक मूल्यों को अपनाने के भी खिलाफ हैं। यह भी दिलचस्प है कि यही लोग अभी कुछ समय पहले तक इसी शब्द का जम कर इस्तेमाल करते थे। मेड इन इंडिया, स्किल इंडिया, क्लीन इंडिया ये सब नाम आखिर किसके दिए हुए हैं? अपनी चुनावी सभाओं में मोदी 'वोट फॉर इंडिया' का नारा भी देते रहे हैं।

"इंडिया, जो भारत है", निरंतरता और परिवर्तन दोनों को एकसाथ अभिव्यक्त करता अद्भुत शब्द समूह है। वह हमारी महान परम्पराओं को कायम रखने के साथ ही समयानुरूप परिवर्तनों को गले लगाने की बात करता है। इन्हीं परिवर्तनों ने आधुनिक भारत की नींव रखी है।

भारत के संविधान निर्माताओं को 'भारत' शब्द से कोई एलर्जी नहीं थी। उन्होंने उसे हमारी आत्मा के रूप में स्वीकार किया। वे 'भारत' और 'इंडिया' को एक-दूसरे का विरोधाभासी नहीं मानते थे। वे आधुनिक भारत की आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं को समझते थे। यही कारण है कि उन्होंने गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर के 'जन गण मन' को राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया, जिसमें 'भारत भाग्य विधाता' की बात कही गयी है। राजीव गांधी ने 21वीं सदी के भारत की परिकल्पना करते हुए 'मेरा देश महान' का नारा दिया था।

पूरी दुनिया हमारे देश को 'इंडिया' नाम से ही जानती है। यह भी दिलचस्प है कि 'भारत' शब्द के प्रयोग पर सबसे पहले जिस व्यक्ति ने आपत्ति की थी, उनका नाम था मुहम्मद अली जिन्ना। हमारी स्वतंत्रता के चार हफ्ते बाद, जिन्ना ने भारत के गवर्नर जनरल लार्ड माउंटबैटन को लिखे एक पत्र में हमारे देश के लिए 'इंडिया' शब्द के इस्तेमाल का विरोध किया था।

उन्होंने लिखा था, "यह दुखद है कि किन्हीं छुपे हुए कारणों की वजह से हिंदुस्तान ने अपने लिए 'इंडिया' शब्द को अंगीकार किया है। यह गुमराह करने वाला है और इसका उद्देश्य भ्रम फैलाना है।" जिन्ना के अनुसार, 'इंडिया' उस अविभाजित राष्ट्र का नाम था, जिसका अस्तित्व बंटवारे के बाद समाप्त हो गया है। क्या हम कह सकते हैं कि आज जो लोग इंडिया शब्द के इस्तेमाल पर हमलावर हैं, वे जिन्ना की राह पर चल रहे हैं?

(अंग्रेजी से रूपांतरण अमरीश हरदेनिया; लेखक आईआईटी मुंबई में पढ़ाते थे और सन 2007 के नेशनल कम्यूनल हार्मोनी एवार्ड से सम्मानित हैं)